माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

मु.उ.पु. 24 पृष्ठ

कार्यालयीन उपयोग के लिए

परीक्षा के नाम की सील: हायर ... – 2009

निम्न रिक्तियों की सही प्रविष्टि परीक्षार्थी द्वारा की जाए।

1. विषय कोड | 1 | 2 | 0 | परीक्षा का विषय भूगोल
2. परीक्षा का माध्यम हिन्दी परीक्षा की दिनांक 6/3/09
3. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र का पूर्ण कोड नम्बर (सेट **A, B, C,** या **D**) अनिवार्यतः भरें — कोड: U-2033 सेट: A

[redacted]

(अंग्रेजी अंकों में)

[redacted]

दिये प्रत्येक कालम में ऊपर दिये गये अनुक्रमांक के अंकों ... में लिखा जाए :-

[redacted]

केन्द्र क्रमांक की सील

शा. उ... केन्द्र क्रमांक – 641009

पर्यवेक्षक / केन्द्राध्यक्ष का प्रमाणीकरण

प्रमाणित किया जाता है कि परीक्षार्थी द्वारा निम्नानुसार पूरक उत्तरपुस्तिका ली गई है :–

क :– संख्या शब्दों में X अंकों में X

ख :– परीक्षार्थी की बैठक व्यवस्था कक्ष क्रमांक हॉल में है।

ग :– उत्तर पुस्तिका पर प्रश्न–पत्र का कोड नम्बर एवं सेट सही लिखा है।

हस्ताक्षर (पर्यवेक्षक)

नाम Archana S. Chauhan पद Adhyapak

पता / संस्था G.M.S. Pandado

परीक्षार्थी द्वारा ली गई सभी पूरक उत्तर पुस्तिकायें, मुख्य उत्तर पुस्तिका के साथ संलग्न हैं।

हस्ताक्षर केन्द्राध्यक्ष

B S E M P

परीक्षार्थी, परीक्षक से अपेक्षा है कि वे पृष्ठ भाग पर दिये गये निर्देशों का यथेष्ट पालन सुनिश्चित करेंगे।

प्रमाणित किया जाता है कि उपरोक्तानुसार संलग्न पूरक उत्तर ... चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही उत्तरपुस्तिका का मूल्यांक... पुस्तिका के अन्दर के अंक एवं कव्हर पृष्ठ पर दर्शाये अंक ए...

हस्ताक्षर (परीक्षक) 23-3-09 हस्ताक्षर (उप...

परीक्षक क्रमांक 3540604 दिनांक........

परीक्षार्थी के लिए निर्देश

1. परीक्षार्थी को अपना अनुक्रमांक/विषय/माध्यम/दिनांक एवं प्रश्न–पत्र का कोड (समूह) मुख पृष्ठ पर अंकित करना अनिवार्य है। अन्यत्र कहीं भी नहीं लिखा जाएगा।
2. अनुक्रमांक नीचे दिये गए उदाहरण अनुसार लिखा जाए :–

1	8	2	4	3	9	5	6	8
एक	आठ	दो	चार	तीन	नौ	पाँच	छः	आठ

3. उत्तर पुस्तिका के दोनों ओर पृष्ठों में लिखें। बीच में रिक्त स्थान न छोडें। भूल से छूटा/रिक्त स्थान तथा शेष खाली पृष्ठों को क्रास किया जाए।
4. परीक्षार्थी प्रश्न पत्र हल करते समय ही, कव्हर पृष्ठ पर दी गई तालिका में प्रश्न क्रमांक के सम्मुख वाले कालम में उत्तरपुस्तिका का वह पृष्ठ क्रमांक अनिवार्य रूप से अंकित करें जिस पर प्रश्न का उत्तर लिखा गया है। यदि पूरक उत्तरपुस्तिका का उपयोग किया गया हो, तो उस पर 25 से प्रारंभ करते हुए पृष्ठ क्रमांक परीक्षार्थी द्वारा स्वयं डाले जाएँ।

परीक्षक के लिए निर्देश

1. केवल उन्हीं उत्तरपुस्तिकाओं का मूल्यांकन करें जिन पर होलो क्राफ्ट स्टीकर चस्पा है।
2. उत्तरपुस्तिका का मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया जाये।
3. बिना होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली तथा फटे हुए होलो क्राफ्ट स्टीकर वाली सभी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन हेतु परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से भेजी जाये।

मूल्यांकन केन्द्र के लिए निर्देश

1. **O.M.R. SHEET** पर प्राप्तांक की प्रविष्टि करने हेतु केवल वही उत्तरपुस्तिकाएँ प्राप्त करें, जिनका मूल्यांकन होलो क्राफ्ट स्टीकर को चस्पा स्थिति में यथावत् रखते हुए ही किया गया है। यदि होलो क्राफ्ट स्टीकर फटा हुआ पाया जाता है तो ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी को पृथक से सौपी जाएँ। ऐसे प्रकरणों के प्राप्तांकों की प्रविष्टि **O.M.R. SHEET** में नहीं की जाए। मूल्यांकन केन्द्र अधिकारी ऐसी उत्तरपुस्तिकाऐं पुनः मूल्यांकन के लिये परीक्षा नियंत्रक, माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल को व्यक्तिशः रूप से सौपेंगे।
2. उत्तरपुस्तिका के मुख्य पृष्ठ में अंकों एवं शब्दों में अंकित प्राप्तांकों को मिलान कर **O.M.R. SHEET** में अंकों की सटीक प्रविष्टि करें।
3. **O.M.R. SHEET** पर प्रमाणीकरण कर हस्ताक्षर करें।

उ01

सही विकल्प

(अ) (ii) ई. सी. सेम्पुल

(ब) (i) कृषि

) (ii) लौह इस्पात उद्योग।

(द) (i) ट्रान्स साइबेरियन रेलमार्ग

(इ) (iv) प. व प. बंगाल

सही जोड़ी

(अ) जूट — प. बंगाल

(ब) इंदिरा गाँधी नहर — राजस्थान

(स) थूरेनियम — केरल

(द) भारत का मानचेस्टर — अहमदाबाद

(इ) मध्य - स्तरीय प्रदेश — द्वितीय श्रेणी के आर्थिक प्रदेश।

उ03

रिक्त स्थान

(i) जूट भारत का सुनहरी रेशा कहलाता है।

BSEM

(ii) भिलाई इस्पात संयंत्र देश सोवियत रूस के सहयोग से स्थापित किया गया है।

(iii) बढ़ती जनसंख्या और देश के आर्थिक विकास के लिए जल संसाधन का विशेष महत्व है।

(iv) भारत में सोन नदी काले सोने के निक्षेपों के लिए प्रसिद्ध है।

(v) संसार में सबसे ऊँची सड़क मनाली से लेह तक है।

BSEMP

Q.5 सत्य / असत्य

(i) सत्य

(ii) असत्य

(iii) सत्य

(iv) असत्य

पृष्ठ के अंकों का योग

(v) असत्य

P.T.O

Section (B)

प्र० 5- ग्रामीण बस्तियों के प्रमुख प्रतिरूप -

(i) रेखीय प्रतिरूप - रेखीय बस्तियों का विस्तार एक रेखा के रूप में होता है। ये बस्तियाँ सड़क के किनारे समानान्तर बसी होती हैं। तथा मकान एक दूसरे के सामने होते हैं।

(ii) वृत्ताकार प्रतिरूप - वृत्ताकार बस्तियां किसी तालाब या झील के किनारे बसी होती हैं। इन बस्तियों में अधिकांश धोबी, जुलाहे आदि निवास करते हैं।

(iii) आयताकार प्रतिरूप - ये बस्तियां आयताकार रूप में बसी होती हैं। इनकी सड़के परस्पर लम्बवत और समान्तर होती हैं।

अरीय प्रतिरूप - जब किसी गाँव में विभिन्न दिशाओं से मार्ग आकर मिलते हैं तो ग्रामवासी इन सड़कों के किनारे-किनारे मकान बना लेते हैं। ऐसी बस्तियां अरीय प्रतिरूप बस्तियां कहलाती हैं।

पृष्ठ के अंकों का योग

उ० 6- एक आदर्श बन्दरगाह की प्रमुख विशेषताएं निम्न प्रकार हैं -

BSEMP

(6)

योग पूर्व पृष्ठ   पृष्ठ क्रमांक   पूर्णांक

(1) बंदरगाह का तट तेज लहरों व तूफानी हवाओं से सुरक्षित हो।

(2) तट शीत ऋतु में जमता न हो।

(3) बंदरगाह की पृष्ठभूमि पर्याप्त औद्योगिक विकास वाली हो।

(4) तट की जलवायु व्यापार अनुकूल हो।

(5) बंदरगाह का पृष्ठप्रदेश पर्याप्त जनसंख्या वाला हो। ताकि आयातित माल की खपत व निर्यातित माल की प्राप्ति हो सके।

(6) तट की गहराई पर्याप्त हो ताकि जहाज भीतर तक प्रवेश कर सके।

(7) तट कटा-फटा न हो।

(8) तट पर जहाजों के लिए ईंधन पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो।

(9) पृष्ठ भूप्रदेश उत्तम परिवहन के साधनों द्वारा बंदरगाह से जुड़ा हो।

(10) जहाजों के ठहरने की समुचित व्यवस्था हो।

7- जनसंख्या वितरण एवं घनत्व को प्रभावित करने वाले कारक —

(i) धरातल — समतल मैदानी भागों में जनसंख्या का घनत्व अधिक होता है। क्योंकि वहाँ जीवन की सुविधाएं पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होती हैं। इसके विपरीत पर्वत-पठारी एवं ऊबड़-

पृष्ठ

खाबड़ प्रदेशों में जनसंख्या का घनत्व कम होता है। क्योंकि ये क्षेत्र जीवन की सुविधाओं से रहित होते हैं।

(ii) **जलवायु** — सम एवं समशीतोष्ण जलवायु मानव स्वास्थ्य के अनुकूल होती है। अतः सम जलवायु वाले क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व अधिक होता है। जबकि विषम जलवायु वाले क्षेत्रों में अपेक्षाकृत कम जनसंख्या निवास करती है।

(iii) **कृषि का विकास** — जिन क्षेत्रों में कृषि का विकास अधिक होता है। वहाँ खाद्यान्न की उपलब्धता के कारण अधिक जनसंख्या के भरण-पोषण की सुविधा होती है। अतः अधिक जनसंख्या निवास करती है।

iv) **उद्योगों का विकास** — औद्योगिक विकास वाले देशों में उद्योगों का विकास अधिक होने से कारखानों में लोगों को काम मिल जाता है। अतः जनसंख्या का घनत्व अधिक होता है।

" भारत में विविधता में एकता है "। यह कथन पूर्णतः सत्य है। इस कथन के औचित्य को अग्र प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है —

BSEMP

(i) भारत के मध्य से "कर्क रेखा" गुजरने के कारण। यहाँ उष्ण तथा उपोष्ण दोनों प्रकार की जलवायु पाई जाती है।

(ii) भारत में विभिन्न धर्मों, जातियों, जनजातियों तथा सम्प्रदाय के लोग रहते है। इनके प्रथाओं, विश्वासों मूल्यों तथा रीतिरिवाजों मे भिन्नता पाई जाती है। फिर भी सभी धर्म के अनुयायियों के मध्य सामंजस्य है।

(iii) भारत में अधिक वर्षा वाले स्थान (चेरापूंजी), कम वर्षा वाले स्थान (राजस्थान), हिमालयी क्षेत्र, अधिक जनघनत्व वाले स्थान तथा कम घनत्व वाले स्थान एकसाथ विद्यमान है। जिन्हे हमारी भौगोलिक सीमाए एक करती है।

) भारत में विभिन्न क्षेत्रों मे तापमान और वर्षा मे अंतर होने पर भी मानसूनी जलवायु सभी क्षेत्रों को एक करती है।

उक्त कथनों (उदा.) से स्पष्ट होता है कि "भारत में विविधता में भी एकता" विद्यमान है।

BSFNI

[ ]
पृष्ठ के अंकों का योग

Q.09 "सड़के भारतीय अर्थव्यवस्था की जीवन-रेखाएं" इस कथन को निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है —

(1) भारतीय अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ संचालन में सड़कों का महत्वपूर्ण स्थान है।

(2) खेतों से कच्चा माल कारखानों तक तथा कारखानों से निर्मित वस्तुएं बाजारों तक सड़कों के माध्यम से ही पहुँचाई जाती हैं।

(3) ग्रामीण क्षेत्रों के कृषि उत्पाद भी सड़कों के माध्यम से ही बाजारों तक पहुँचाया जाता है।

(4) रेलों द्वारा ले जाई जाने वाली वस्तुएं, कच्चा माल भी सड़कों के माध्यम से स्टेशनों तक पहुँचाया जाता है। तथा रेलों द्वारा लाए गए माल आन्तरिक क्षेत्रों में वितरण भी सड़कों के माध्यम से किया जाता है।

5) अन्य साधनों की अपेक्षा सड़क परिवहन द्वारा समान की अधिक सुरक्षा रहती है। क्योंकि इसमें माल को बार-बार उतारना-चढ़ाना नहीं पड़ता।

(6) सड़के बहुउपयोगी होती है।

BSEMP

उ० (16) - पर्यावरण प्रदूषण — आज बढ़ती हुई भौतिक-वादी और विचारधारा के कारण मानव अपने सुख - सुविधाओं के साधनों में अधिक से अधिक वृद्धि चाहता है। और इसके लिए वह प्राकृतिक सम्पदाओं का अंधाधुंध दोहन कर रहा है। इस अविवेक पूर्ण दोहन का परिणाम हमें पर्यावरण प्रदूषण के रूप में दिखाई दे रहा है।

प्रदूषण के प्रमुख प्रकार —

(i) वायु प्रदूषण — (आजकल सब कारखानों में जलने वाली अंगीठियों)

आजकल कारखानों से निकलने वाली गैसों तथा घरों में जलने वाली अंगीठियों से वायु मण्डल प्रदूषित हो रहा है।

BSEMP

(ii) जल प्रदूषण — बहता हुआ मल-मूत्र, नगरों एवं नालों का गंदा पानी नालियों से होकर नदियों में जाता है। नदियों का यह प्रदूषित पानी हमारे पीने के काम आता है। जिससे अनेक रोग उत्पन्न होते हैं।

(iii) ध्वनि प्रदूषण — ध्वनि प्रदूषण के प्रमुख स्त्रोत उद्योग है।

(iv) रासायनिक प्रदूषण — खाद, कीटनाशक दवाओं आदि के रूप में रासायनिक पदार्थों का उपयोग। रासायनिक प्रदूषण का कारण है

उ० 12 जीविकोपार्जन कृषि — वह कृषि जो जीवन-निर्वाह की दृष्टि की से की जाती है। जीविकोपार्जन कृषि कहलाती है।

जीविकोपार्जन कृषि की विशेषताएं —

(1) जीविकोपार्जन कृषि उदरपूर्ति हेतु किया गया मानव का प्राथमिक प्रयास है।

(2) इस प्रकार की कृषि में अधिक बुद्धि व कौशल की आवश्यकता नहीं होती।

(3) ये कृषि पिछड़े क्षेत्रों में अधिक प्रचलित है।

(4) इस प्रकार के कृषक अर्द्धसभ्य जीवन व्यतीत कर रहे हैं। तथा इनके पास जीवन की सुविधाओं का अभाव होता है।

(5) इस कृषि के अन्तर्गत कृषक केवल अपनी उपभोग की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु कृषि करता है।

(6) उसके औजार भी अपेक्षाकृत पुराने होते हैं।

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

(7) नियति हेतु फसलों का उत्पादन नहीं किया जाता।

(8) उर्वरकों, कीटनाशक दवाओं का प्रयोग भी अपेक्षाकृत कम किया जाता है।

9) उन्नत तकनीक एवं उच्च प्रौद्योगिकी का अभाव होता है।

(10) जीविकोपार्जन कृषि मुख्यतः एशिया महाद्वीप के देशों में की जाती है। उदा. भारत, जापान, बांग्लादेश, चीन आदि।

(11) वर्तमान में जीविकोपार्जन कृषि की दिशाओं में भी बदलाव आ रहा है। कृषक कृषक समुदाय शिक्षित होने के कारण अपेक्षाकृत श्रेष्ठ तरीके से कृषि करता है। श्रेष्ठ ओजारों को उपयोग में लाता है। तथा कुछ सीमा तक नकदी फसलों का भी उत्पादन किया जाने लगा है।

जीविकोपार्जन कृषि मुख्यतः विकासशील देशों में की जाती है। तथा कृषक पहले की अपेक्षा श्रेष्ठ प्रकार से कृषि कार्यों को सम्पादित कर रहे हैं।

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

(प्र014) भारत में चाय की खेती के लिए आवश्यक भौगोलिक दशाएं —

(1) **तापमान** — चाय के लिए वर्षभर ऊंचा तापमान 25° से 30° सेल्सियस उत्तम रहता है।

(2) **वर्षा** — चाय के लिए औसतन वार्षिक वर्षा 150 से 200 c.m. आवश्यक होती है। इसके क इससे कम वर्षा वाले भागो मे चाय पैदा नही की जा सकती।

(3) **धरातल** — चाय के लिए ढालू धरातल होना चाहिए। ताकि पौधे की जड़ों में पानी न रुके। अन्यथा पौधा सड़ जाता है।

(4) **सस्ते श्रमिक** — चाय की खेती में सभी कार्य पत्तियां चुनना, सुखाना आदि हाथ से किए जाते हैं। अतः सस्ते श्रमिकों की आवश्यकता होती है।

(5) **मृदा** — चाय के लिए पहाड़ी मृदा उपयुक्त होती है। बालुई मृदा मे भी चाय की खेती की जा सकती है।

B S E M P

(6) उर्वरक — चाय की उपज बढ़ने हेतु उर्वरकों का भी प्रयोग किया जाता है। चाय के लिए अमोनियम व नाइट्रेट उर्वरक उत्तम होते हैं।

भारत में चाय का सर्वाधिक उत्पादन (उत्पादन क्षेत्र) —

भारत में चाय का सर्वाधिक उत्पादन असम में होता है। यहाँ कुल चाय का 70% भाग पैदा किया जाता है। इसके अलावा दार्जिलिंग, व पश्चिम बंगाल में भी चाय का उत्पादन होता है।

15 उत्तर — रेल मार्ग परिवहन का भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्व —

रेल परिवहन में का भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्व निम्न प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है —

(1) अधिक माल, अधिक यात्री की प्राप्ति —

रेलो द्वारा सर्वाधिक मात्रा में माल व यात्रियों का परिवहन किया जाता है। रेलो द्वारा एक बार में जितना माल ढोया

जाता है। वह किसी अन्य परिवहन के द्वारा सम्भव नहीं है।

(2) बहुउपयोगी — रेलों द्वारा केवल माल का ही परिवहन नहीं किया जाता। बल्कि यात्रियों व सभी प्रकार के कच्चे माल का भी परिवहन किया जाता है।

(3) लम्बी दूरी हेतु उपयुक्त — लम्बी दूरी हेतु रेल परिवहन सबसे उपयुक्त साधन है। रेल में लम्बी दूरी हेतु यात्रियों के लिए शयन व खान-पान की सुविधाएं बढ़ाई गई हैं। इसके साथ ही एयर-कंडीशन युक्त डिब्बों की भी सेवाएं बढ़ाई गई हैं।

(4) कृषि विकास में सहायक — रेलों द्वारा कृषि के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन किया गया है। कृषि हेतु उर्वरक, बीज, कीटनाशक आदि कृषि संबंधी वस्तुएं रेलों द्वारा ही ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुंचाई जाती हैं।

(5) औद्योगिक विकास में सहायक — रेलों द्वारा ही उद्योगों तक कच्चा माल पहुंचाकर किसी उद्योग के विकास सहायता दी जाती है। तथा उद्योगों द्वारा निर्मित

B S E M P

पृष्ठ के अंकों का योग

वस्तुएं भी बाजारों में पहुंचाने का काम रेलों द्वारा किया जाता है।

उ० 16 — मुम्बई महानगरीय प्रदेश की प्रमुख समस्याएं —

(1) आवास की समस्या — मुम्बई प्रदेश में बढ़ती हुई जनसंख्या ने जो समस्याएं उत्पन्न की हैं। उनमें प्रमुख समस्या आवास की है। जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में मुम्बई प्रदेश में मकान उपलब्ध नहीं हैं। तथा भूमि व मकान दिनों-दिन महंगे होते जाते रहे हैं।

(2) रोजगार की समस्या — विभिन्न क्षेत्रों से लोग रोजगार की तलाश में मुम्बई आ रहे हैं। मुम्बई में जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में रोजगार की सुविधाएं उपलब्ध नहीं हैं। जिससे बेरोजगारी में निरन्तर वृद्धि होती जा रही है।

(3) वायु प्रदूषण — मुम्बई में कारखानों की चिमनियां, रात-दिन दौड़ने वाले वाहन, घरों में जलने वाली अंगीठियां आदि से निकलने वाले धुएं। और उसके साथ निकलने वाले अन्य विषाक्त तत्वों से

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

वायुमण्डल प्रदूषित होता है। जिससे हैजा, पेचिस, दम, पीलिया जैसे रोग उत्पन्न हो रहे हैं।

(4) जल प्रदूषण — बहता हुआ मल-मूत्र, नगरों एवं नालों का गंदा पानी नालियों से होकर नदियों में जाता है। नदियों का यह प्रदूषित पानी लोगों के पीने के काम आता है। जिससे हैजा, पेचिस, पीलिया जैसे रोग उत्पन्न होते हैं।

(5) पारिस्थितिक असन्तुलन — मुम्बई प्रदेश में जनसंख्या वृद्धि दिनों-दिन विकराल रूप धारण करती जाती रही है। जनसंख्या वृद्धि के अनुपात के अनुपात में साधन उपलब्ध न होने के कारण प्राकृतिक साधनों का दोहन किया जा रहा है। जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरण में असन्तुलन पैदा हो रहा है।

(6) नगरीय अपशिष्ट निपटान की समस्या — नगरों में जनसंख्या वृद्धि का एक दुष्परिणाम के नगरीय अपशिष्ट तथा इनकी वजह से बीमारियों में वृद्धि होना है। महानगरों में कूड़ा-करकट यत्र-तत्र लापरवाही

पृष्ठ के अंकों का योग

BSEMP

से ढाह दिया जाता है। इनमें सड़क उत्पन्न होने से शोरों में वृद्धि होती है।

(7) मलिन बस्तियों में वृद्धि — नगरों में जनसंख्या वृद्धि के अनुपात में आवासीय सुविधा उपलब्ध न होने से मलिन बस्तियों में वृद्धि हो रही है।

(8) निम्न जीवन स्तर — रोजगार उपलब्ध न होने, आवासीय सुविधा उपलब्ध न होने से लोगों का जीवन-स्तर गिरता चला जाता है। जिससे वे गरीबी में जीने के लिए विवश होते हैं।

वर्तमान समय में मुम्बई प्रदेश की जनसंख्या पर नियंत्रण रखना एक मौलिक आवश्यकता है। यदि इस महानगर की जनसंख्या इसी प्रकार बढ़ती रही तो जनसाधारण के लिए उनकी सुविधाओं के साधन जुटाने असम्भव हो जाएंगे। वर्तमान समय में मुम्बई प्रदेश में जनसंख्या वृद्धि के कारण अनेक समस्याएं उत्पन्न हो गई है। यदि अभी इन समस्याओं का समाधान नहीं ढूंढा गया तो इनका समाधान करना हमारे वश में ही नहीं रहेगा।

BSEMP

उ011 — मानव विकास —

डॉ. महबूब उल-हक द्वारा दी गई मानव-विकास की परिभाषा के अनुसार — मानव विकास का अर्थ लोगों के विकल्पों में वृद्धि करना है।

मानव विकास को प्रभावित करने वाले भौगोलिक कारक —

(1) जलवायु — सम जलवायु वाले क्षेत्रों में जीवन की सुविधाएं उपलब्ध होने के कारण मानव-विकास अधिक होता है।

(2) धरातल — समतल धरातल क्षेत्रों में सिंचाई सुविधाएं उपलब्ध होने के कारण लोगों का आर्थिक विकास अधिक होता है। परिणाम स्वरूप मानव-विकास अधिक होता है।

(3) मृदा — जिन क्षेत्रों में उपजाऊ मृदा होती है। वहां कृषि का विकास अधिक होने से मानव-विकास अधिक होता है।

(4) वर्षा — जिन क्षेत्रों में वर्षा पर्याप्त मात्रा में होती है। वहां कृषि व उद्योगों का विकास अधिक होने से मानव-विकास

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

का स्तर ऊंचा रहता है। इसके विपरीत जिन क्षेत्रों में अधिक व कम वर्षा होती है वहां मानव विकास का स्तर नीचा रहता है।

(5) तापमान — सम तापमान वाले क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व अधिक होने से तथा व मानव सुविधाएं होने से विकास अधिक होता है।

इसके विपरीत जिन क्षेत्रों में तापमान ऊंचा रहता है। वहां जनसंख्या का घनत्व कम तथा मानव - विकास भी कम होता है।

मानव विकास में लोगों के विकल्पों में वृद्धि की जाती है। उनके जीवन स्तर में सुधार लाने का प्रयत्न किया जाता है। जिससे देश आर्थिक विकास के मार्ग पर अग्रसर हो सके। वर्तमान में मानव विकास द्वारा लोगों के जीवन स्तर में सुधार करने के व्यापक प्रयास किए जा रहे हैं।

आशा है यह प्रयास व्यावहारिक रूप लेंगे। क्या देश के लोगों के जीवनस्तर में सुधार आएगा।

BSEM

पृष्ठ के अंकों का योग

Roll No - 296416109

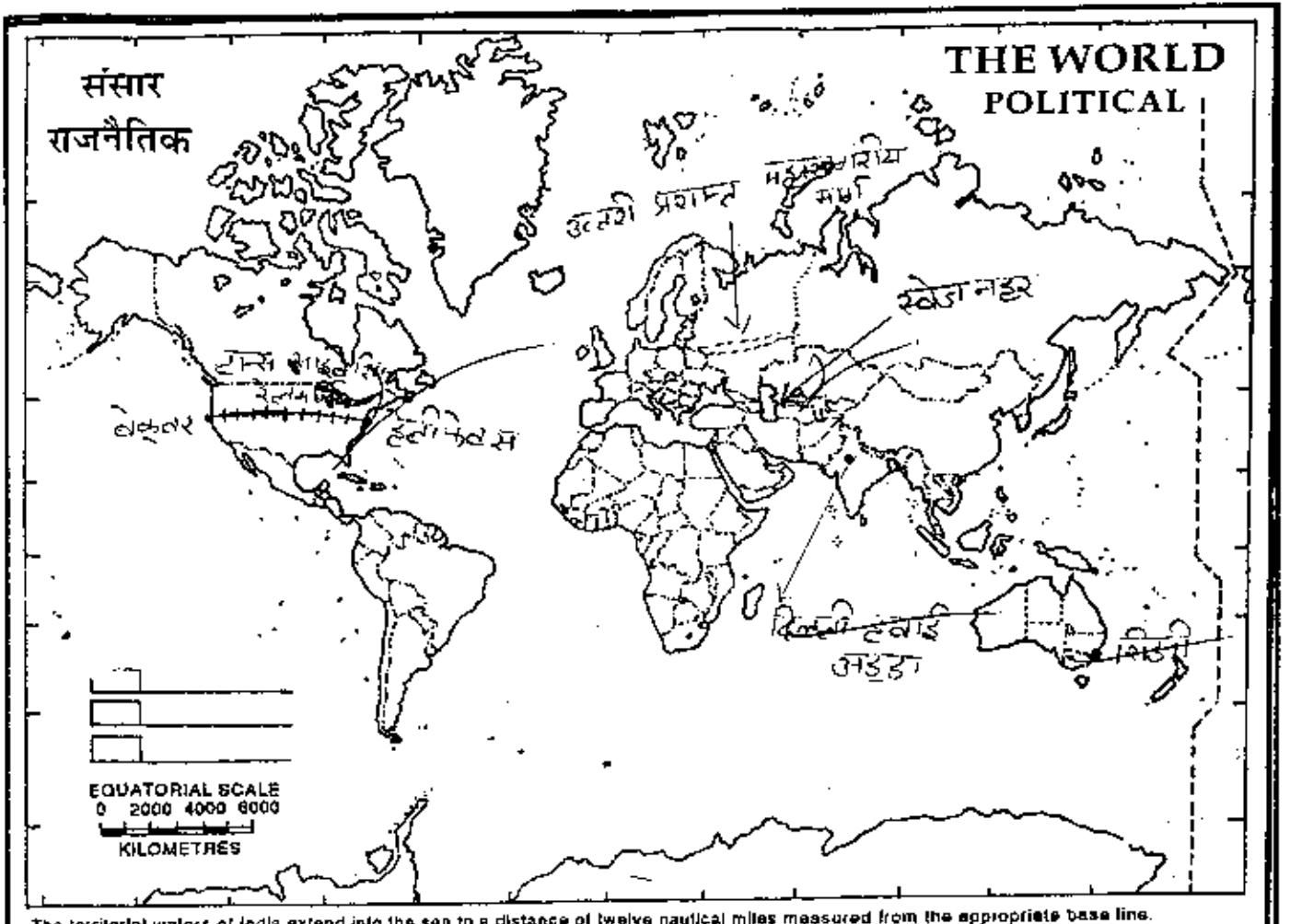

The territorial waters of India extend into the sea to a distance of twelve nautical miles measured from the appropriate base line.
The External Boundary of India shown on this map agrees with Record/Master copy certified by the Survey of India, Dehra Dun, vide their letter No. T.B 666 /62-A-3/213 dated : 25-3-94

62	+	2	=	64
योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 21 के अंक		कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग

22

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 22 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

(23)

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 23 के अंक = कुल अंक

मध्यप्रदेश

B
S
E
M
P

पृष्ठ के अंकों का योग

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 24 के अंक = कुल अंक

BSEMP

पृष्ठ के अंकों का योग